ज्योतिषनिबंधमाला

ज्योतिषामयनं साक्षात् यत्तद् ज्ञानं अतिन्द्रियम् ।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम् ।।

(भागवत पुराण)

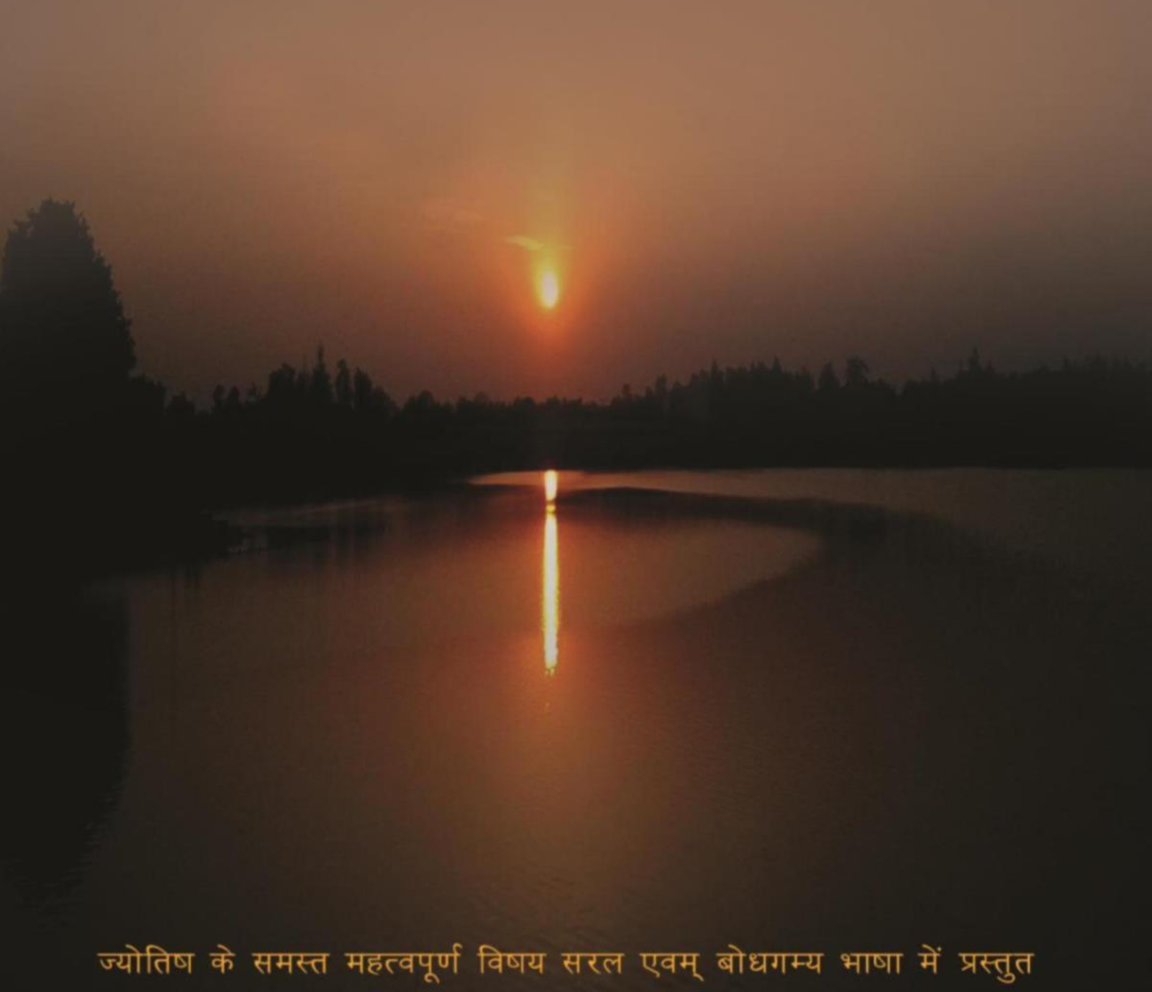

ज्योतिष के समस्त महत्वपूर्ण विषय सरल एवम् बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत

कृष्णकान्त भारद्वाज

ज्योतिषनिबंधमाला

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
ShubhamVihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-712-4

Price: ₹400.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

ज्योतिषनिबंधमाला

कृष्ण कान्त भारद्वाज

ज्योतिष के उपयोगी तथा महत्वपूर्ण
विषय निबंध के रूप में प्रस्तुत

प्राचीन फलित ज्योतिष ग्रंथों,
पुराणों तथा संहिताओं के अध्ययन

मनन और विश्लेषण पर आधारित

प्रत्येक निबंध में विस्तृत और विश्लेष्णात्मक विवेचन

विंशोत्तरीदशाफलकथन के
शास्त्रीय व अनुभूत सूत्र

जन्मकुंडली के भावकथन के महत्वपूर्ण सिद्धांत

सरल एवम् बोधगम्य भाषा

गणपतिवंदना

एकदन्तंचतुर्हस्तंपाशमंकुशधारिणमं।
रदं च वरदंहस्तैर्बिभ्राणंमूषक ध्वजम्।।
रक्तंलम्बोदरं शूर्पकर्णकम् रक्तवाससम्।
रक्तगंधानुलिप्तांगंरक्तपुष्पैः सुपूजितं।।
भक्तानुकम्पिनंदेवंजगत्कारणमच्युतं।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।।
एवं ध्यायतियोनित्यम् स योगी योगिनांवरः।।

समर्पण

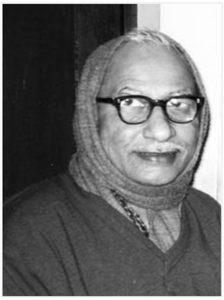

1934 – 2009

पूज्य पिता ब्रह्मलोक निवासी श्री कपिलदेव शर्मा जी को सादर समर्पित जिनकी स्मृति सदैव हम सब के हृदय में ज्योति के समान प्रकाशित रहती है।

ग्रन्थ के विषय में

फलितज्योतिष के विषय पर आज प्राचीन नवीन असंख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इस विषय पर कुछ भी नवीन लिखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। एक नूतन प्रयास करते हुए ज्योतिषनिबंधमाला नामक इस ग्रन्थ में मैंने ज्योतिष के उपयोगी तथा महत्वपूर्ण सभी विषयों को निबंध के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रत्येक निबंध अपने आपमें सम्पूर्णता लिए हुए है तथा उसमें सम्बंधित विषय को पूरी तरह से सरल भाषा में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

जन्मकुंडली, फलितज्योतिष, मुहूर्त, वास्तु शास्त्र, स्वप्न, शकुन, मेलापक आदि ज्योतिष शास्त्र के सभी अंगों से सम्बंधित महत्वपूर्ण विषयों का अनुसन्धानात्मक एवम् विश्लेष्णात्मक विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ में करने का प्रयास किया गया है।

ये सभी निबंध सारावली, बृहत्पराशरहोराशास्त्र, बृहत्जातक, मानसागरी, फलदीपिका, होरारत्नम, जातकपारिजात, प्रश्नमार्ग, ताजिकनीलकंठी, प्रश्नचण्डेश्वर, प्रश्नभूषण, मुहूर्तगणपति, मुहूर्तचिंतामणि, बृहत् दैवज्ञरंजनम् आदि प्राचीन वैदिक ज्योतिषग्रंथों, पुराणों तथा संहिताओं के अध्ययन मनन और विश्लेषण पर आधारित हैं। मंगलीकदोष, कालसर्प योग, रत्न धारण आदि विवादास्पद विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

मुझे विश्वास है की यह ग्रन्थ संग्रहणीय तथा ज्योतिष साहित्य का अध्ययन करने वाले सभी पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करने वाला होगा।

कृष्ण कान्त भारद्वाज
लेखक एवम् ज्योतिर्विद
1480／5 ज्योतिनगरकुरुक्षेत्र
91–9416346682
kant.krishan@gmail.com

लेखक परिचय

10 दिसम्बर 1954 को लाडवा कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में जन्म।पितामह श्री माधोराम जी, नाना श्री रामस्वरूप जी तथा पिता श्री कपिलदेव शर्मा जी के स्वाध्याय के प्रति लगाव से प्रभावित होकर बाल्यावस्था से ही धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थ पढने की रूचि रही राजनीति शास्त्र में स्नातक।

हरियाणा शिक्षाविभाग से प्रवक्ता के पद पर सेवानिवृत।ज्योतिष के क्षेत्र में लगभग 30 वर्ष का व्यवहारिक अनुभव।

पूर्वप्रकाशितग्रन्थ–जन्मकुंडलीफलितदर्पण, बृहत् ज्योतिषज्ञान, प्रश्नफलनिर्णय तथा विंशोत्तरी दशाफल निर्णय (सभी मनोजप्रकाशन बुराड़ी दिल्लीसे प्रकाशित)।

प्रकाशितलेख कादम्बिनी (तन्त्र मन्त्र ज्योतिष विशेषांक), सुमनसुधा, कल्याण (ज्योतिष तत्वांक) सर्वमंगला व अन्य पत्रिकाओं में ज्योतिष साहित्य पर सारगर्भित लेख प्रकाशित अपने ब्लॉग vaidic astrology पर लगभग 10 वर्षों से नियमित लेखन तथा पाठकों को निःशुल्क परामर्श।

पं. कृष्ण कान्त भारद्वाज

लेखक एवम् ज्योतिर्विद्

विषय सूचि

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	ज्योतिष शास्त्र का महत्व	1
2.	दैवज्ञ में कौन से गुण होने चाहियें	9
3.	संवत्सर के भेद एवम् फल	14
4.	पुराणोंऔर संहिताओं में नक्षत्र वर्णन	25
5.	जन्मलग्न, जन्मराशि का मनुष्य के व्यक्तित्व पर प्रभाव	34
6.	त्रिविध गंडांत और शान्ति	43
7.	जन्मकुंडली का परिचय और उपयोगिता	53
8.	सूर्य पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	66
9.	चन्द्र पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	77
10.	मंगल पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	88
11.	बुध पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	97
12.	बृहस्पति पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	106
13.	शुक्र पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	115
14.	शनि पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	125
15.	राहु केतु पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में	138
16.	भावफलनिर्धारण के विशिष्ट सिद्धांत	148
17.	हमारी आर्थिक स्थिति तथा जन्मकुंडली	157
18.	जन्मकुंडली तथा संतानसुख	168
19.	जन्मकुंडली से रोग निदान	179
20.	जन्मकुंडली से विवाह व दाम्पत्य सुख विचार	188
21.	विवाह में गुण मिलान	199
22.	मंगलीक दोष का विस्तृत विश्लेषण	209
23.	जन्मकुंडली तथा व्यवसाय	215
24.	किस वार में क्या करें	223

25.	शकुनविचार	224
26.	ज्योतिष में स्वप्नविचार	234
27.	श्राद्ध का महत्व एवम शास्त्रीय विधि	238
28.	रत्न या उपरत्न क्यों और कैसे धारण करें	246
29.	वास्तु शास्त्र के प्रमुख सिद्धांत	264
30.	कालसर्पयोग या पाखण्ड	274
31.	दशाफल के अचूक सिद्धांत	280
32.	ज्योतिष का सुदर्शनचक्र	291

ज्योतिष शास्त्र का महत्व

प्राणी ने अपने पूर्व जन्मों में जो भी शुभाशुभ कर्म किये हैं उन के शुभाशुभ फल तथा उनकी प्राप्ति के समय का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा वैसे ही ज्ञात होता है जैसे अन्धकार में रखे पदार्थों का ज्ञान दीपक द्वारा प्रकाश करने पर होता है। बहुत ग्रंथों में कहा गया है कि जो होने वाला है वह कभी टल नहीं सकता और अनहोनी कभी हो नहीं सकती अर्थात भवितव्यता निश्चित तथा अपरिवर्तनीय है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वभाविक है कि यदि पूर्व जन्म में अर्जित शुभाशुभ फल का इस जन्म में भोगना निश्चित ही है तो ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान की क्या उपयोगिता है।जब हम किसी घटना के शुभाशुभ परिणाम को बदल ही नहीं सकते तो ज्योतिष शास्त्र की सहायता से उनके विषय में पहले ही से जान लेने का लाभ क्या है। इस प्रश्न में भाग्य की प्रबलता पर बल दिया गया है पर पुरुषार्थ का विचार नहीं किया गया है।

भाग्य कि प्रधानता से ही यदि कार्य सिद्ध होते तो शास्त्रों में स्थान पर पुरुषार्थ और कर्म के महत्त्व पर बल नहीं दिया जाता।पूर्व जन्मों में उपार्जित भाग्य भी उद्योग किये बिना फलीभूत नहीं हो सकता।दूसरी और पुरुषार्थ करने पर भी अनेक बार अनुकूल फल नहीं मिलता जिसका कारण स्पष्टतः भाग्य की प्रतिकूलता ही है।जैसे किसान खेत में अनाज उगाने के लिए हल चलाना, बीज बोना, खाद डालना, पानी देना, कीटनाशक डालना इत्यादि सभी प्रकार के कर्म करता है पर असामयिक वृष्टि, ओला वृष्टि अथवा अन्य प्राकृतिक आपदा से फसल नष्ट हो जाए तो यही मानना होगा कि पुरुषार्थ करने पर भी भाग्य की प्रतिकूलता से अनुकूल फल प्राप्त नहीं हुआ।

वास्तव में प्राणियों का जीवन रूपी रथ दो चक्रों भाग्य तथा उद्योग पर आधारित है। दोनों चक्रों से ही रथ चलता है। दोनों का ही महत्व समान है। यदि किसी प्राणी की जन्म पत्रिका, प्रश्न या शकुन आदि के आधार पर उसके पूर्व जन्मों के अशुभ कर्मों के कारण विद्या, विवाह या संतान आदि के अभाव का निर्णय होता है तो भी यज्ञ, दान ,

जप और विशेष अनुष्ठान के माध्यम से उन अदृढ कर्मोपार्जित अशुभ कर्मों के प्रभाव को क्षीण करके उस अभाव को दूर किया जा सकता है। विद्वान व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपने दुर्बल भाग्य को बदल सकता है।यज्ञ, दान, व्रत उपवास, जप और विशेष अनुष्ठान भी शास्त्रों में वर्णित पुरुषार्थ ही है जिस से भाग्य की प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदला जा सकता है।ज्योतिष शास्त्र से हमें अदृष्ट शुभ और अशुभ फल प्राप्ति के समय का ज्ञान होता है। अरिष्ट काल के ज्ञात होने पर हम भौतिक और आध्यात्मिक प्रयत्नों द्वारा उस का प्रतिकार कर सकते हैं जैसे वर्षा आने के लक्षण देख कर हम छाता साथ ले कर चलते हैं क्योंकि वर्षा को रोक पाना हमारे लिए संभव नहीं है पर छाते से हम अपना बचाव तो कर ही सकते हैं।

हिन्दू सनातन संस्कृति का सर्वप्रथम अनुपम सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ वेद है जिनका भारतीय संस्कृति में गौरवमय स्थान है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने ही मानव कल्याण के लिए अपने मुख से वेदों को प्रकट किया।वेद सभी भारतीय विद्याओं का स्रोत हैं। वेद के छह अंग हैं 1 शिक्षा 2 कल्प 3 व्याकरण 4 निरुक्त 5 छंद 6 ज्योतिष। वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के लिए उचित काल का निर्णय करने के लिए इन छह अंगों में ज्योतिष का महत्व सर्वाधिक है। 'ज्योतिषामयनं चक्षु' ज्योतिष को वेद का चक्षु कहा गया है। जैसे नेत्रों के बिना सब कुछ अंधकारमय प्रतीत होता है वैसे ही इसके ज्ञान के बिना सभी वैदिक तथा शास्त्र विहित कार्य करना असंभव है।

यथा शिखा मयूराणाम् नागानां मणयो यथा।
तद्वेदवेदांगशास्त्रानाम् ज्योतिषम् मूर्धनि स्थितम्।।

(वेदांग ज्योतिष)

जैसे मोर की शिखा और नाग की मणि उसके सिर पर होती है वैसे ही वेद के अंगों में ज्योतिष का स्थान सबसे ऊपर है।

विफला न्यन्यशास्त्राणि विवाद्स्तेषु केवलम् ।
सफलं ज्योतिषं शास्त्रं चंद्रार्को यत्र साक्षिणौ।।

(शुद्धि दीपिका)

ज्योतिष के अतिरिक्त सभी शास्त्र साक्षात् न होने से प्रायः विवाद पूर्ण हैं। सूर्य और चन्द्र के साक्षात होने से ज्योतिष शास्त्र को सफल कहा गया है।

ब्रह्मा सूर्यो वशिष्ठो अत्रिर्मनुः पौलस्त्य रोमशौ।
मरीचि अंगिरा व्यासो नारदः शौनको भृगुः।।
च्यवनो यवनों गर्गः कश्यपर्श्च पराशरः ।

अष्टादशैते गंभीराः ज्योतिः शास्त्र प्रवर्तकः।।

(नारद संहिता)

नारद के अनुसार ब्रह्मा, सूर्य आचार्य वशिष्ठ, अत्री, मनु, पौलस्त्य, रोमश, मरीचि, अंगिरा, व्यास, नारद, शौनक, भृगु, च्यवन, यवन, गर्ग, कश्यप और पराशर अठारह ऋषि ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक हैं। इन्हीं ऋषियों ने अपने तप, ज्ञान, सूक्ष्म दृष्टि और अनुभव से ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों की रचना की।

सिद्धांत संहिता होरा रूपं स्कंधत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलंचक्षु ज्योतिःशास्त्र मनुत्तमम्।।

(नारद संहिता)

ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कंध कहे गये हैं –

1. सिद्धांत अथवा गणित
2. संहिता
3. होरा

सिद्धांत

त्रुटी से ले कर प्रलय काल तक की काल गणना सौर, सावन, चान्द्र, नक्षत्र आदि मानों का भेद, ग्रहों की मार्गी वक्री आदि गति, पृथ्वी, नक्षत्र तथा ग्रहों का वर्णन एवम् वेधयंत्र आदि का वर्णन ही सिद्धांत है।

पितामह, वशिष्ठ, रोमक, पौलिश, सूर्य नाम से पांच गणित पद्यतियां हैं जिनका उल्लेख वराहमिहिर ने अपने पञ्च सिद्धान्तिका ग्रन्थ में किया है। आर्य भट्ट की आर्यभट्टीयम्, आचार्य ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मस्फुट सिद्धांत, भास्कराचार्य की लीलावती रचनाएं सिद्धांत ज्योतिष में प्रसिद्ध हैं जिनके आधार पर अनेक ज्योतिष सिद्धांतों की खोज हुई।

संहिता

संहिता में गणित और फलित दोनों के विषय सम्मलित हैं। संहिता सम्बन्धी साहित्य बहुत विस्तृत है जिसमें विश्व तथा व्यक्ति दोनों से सम्बंधित विषयों का मिश्रण प्राप्त होता है। ग्रहों का नक्षत्र भ्रमण, परस्पर युद्ध, उत्पात, शकुन, चेष्टा, अंग विद्या , मांगलिक कार्यों के मुहूर्त, वास्तु विद्या, ग्रहण, वृष्टि, मेलापक, अर्घ काण्ड आदि का वर्णन किया जाता है। बृहत्संहिता, भद्र बाहु संहिता, वशिष्ठ संहिता तथा नारद संहिता आदि कुछ मुख्य संहिता ग्रन्थ हैं।

ज्योतिषनिबंधमाला

ज्योतिष शास्त्र से हमें अदृष्ट शुभ और अशुभ फल की प्राप्ति के समय का ज्ञान होता है। अरिष्ट काल के ज्ञात होने पर हम भौतिक, दैविक और आध्यात्मिक प्रयत्नों द्वारा उस का प्रतिकार वैसे ही कर सकते हैं जैसे वर्षा आने के लक्षण देख कर हम छाता साथ ले कर चलते हैं। वर्षा को रोक पाना तो हमारे लिए संभव नहीं, पर छाते से हम अपना बचाव तो कर ही सकते हैं।

लेखक से संपर्क हेतु :
kant.krishan@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-712-4
9 789360 267124